डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री अर्जन हासिद के प्रति श्रद्धांजलि

हिंदी के कवि एवं कथाकार गंगा प्रसाद विमल को श्रद्धांजलि

26 दिसंबर 2019 (नई दिल्ली)। साहित्य अकादेमी प्रतिष्ठित सिंधी कवि एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री अर्जन हासिद के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है। अर्जन हासिद का जन्म 7 जनवरी 1930 को कराची, सिंध (अब पाकिस्तान) में हुआ था। विभाजन के समय 1947 में आप भारत आ गए और अहमदाबाद में बस गए।

अर्जन हासिद ने निर्बाध रूप से अपने कविता–संग्रहों में नई प्रवर्त्तनकारी विशिष्टताओं को प्रस्तुत करते हुए सिंधी में पारंपरिक शिल्प की ग़ज़ल के विकास में बड़ी भूमिका निभाई। *मेरो सिजु* (मैला सूरज, 1984) नामक उनके संग्रह को साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इस संग्रह की कविताओं में भाषा की अर्थगर्भिता एवं अभिव्यक्ति का अधिकतम उपयोग करनेवाले मुहावरों का प्रयोग करते हुए उन्होंने सिंधी कविता को पांडित्य और शब्दों की बेड़ी से मुक्त किया। उनकी कविता ने जटिल संवेदनाओं, ज्ञानेंद्रियों की व्यावहारिक अदला–बदली और गहन अनुभवों को अभिनव ढंग से प्रस्तुत करते हुए सिंधी कविता में सह–संवेदन को भी प्रस्तावित किया। हासिद का मानना था कि "पार–गमन की राह लंबी है। लेखन सच्ची तपस्या है, गहन तपस्या। यह शांत करती है, तृप्त करती है, ठुनकती है, चीख़ती है, दाँत पीसती है, सुनती है और होंठों को सिल देती है।" उनकी गजलों ने गजल की प्रकृति को बदलने में सफलता प्राप्त की। हासिद के कविता–संग्रहों में *सुवासां जी सुरहां* (साँसों की महक, 1966), *पथर पथर क'न्दा क'न्दा* (प्रत्येक पत्थर, प्रत्येक काँटा, 1974), *मेरा सिजु, मोगो* (मंदबुद्धि, 1992), *उंजना* (प्यास, 1999), *साही पात्जे* (क्षणभर का विश्राम, 2006) और *ना ऐ'न ना* (नहीं, ऐसा नहीं, 2009) प्रमुख हैं। वे अनेक कवियों की प्रेरणा रहे तथा सिंधी कवियों की परवर्ती पीढ़ियों को निरंतर प्रभावित करते रहेंगे।

साहित्य अकादेमी साहित्य समाज के साथ अर्जन हासिद के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

साहित्य अकादेमी प्रख्यात हिंदी कवि एवं कथाकार गंगा प्रसाद विमल के आकस्मिक निधन पर अत्यंत दुख प्रकट करती है। गंगा प्रसाद विमल का निधन श्रीलंका में एक सड़क दुर्घटना में हो गया। गंगा प्रसाद विमल उन हिंदी लेखकों में अग्रणी थे जिन्होंने 'अकहानी आंदोलन' की शुरुआत की और अपनी बहुआयामी रचनाशीलता से साहित्य में श्रीवृद्धि की। गंगा प्रसाद विमल के निधन से साहित्य जगत् को अपूरणीय क्षति हुई है। साहित्य अकादेमी गंगा प्रसाद विमल के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in